अंक-3 वर्ष-3

जयन्ती ते सुकृतिनोरस सिद्धाः कवीश्वराः
नास्तियेशां यशः काये जरामरणजंभयम्

कीर्ति-किञ्जल्क

साधुशरण पाठक की

88 वीं जयंती समारोह 2012

साधुशरण पाठक की

88 वीं जयंती समारोह 2012

सम्पादक

डेजी रानी उपाध्याय

उप संपादक

विनय कुमार मिश्रा

अविनाश कुमार पाण्डेय

प्रकाशक :

एस०एस० मेमोरियल ट्रस्ट, बगहा (प० चम्पारण)

विषय-क्रम

बगहा की सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर-भाग २

साधू शरण पाठक की 87 वीं जयन्ती समारोह वर्ष 2011 के अवसर पर प्रकाशित पत्रिका "कीर्ति किंजल्क" में मैने बगहा की धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सोमेश्वर पहाड़, राजा भरथरी की गुफा, पंछी बिहार परेवादह, लक्ष्मण झूला एवं बागेश्वर झील, नील कंठ, नर्वदेश्वर महादेव, बंजरिया माई स्थान, बैकुण्ठवा माई स्थान एवं शायरी माई स्थान, वाल्मीकिनगर आश्रम, माँ नरदेवी, जटाशंकर धाम, गंडक बराज, चखनी का चर्च, चंडी स्थान, पक्कीबवली, माँ मदनपुर स्थान एवं खैरा कूटी मजार को प्रस्तुत किया था। इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए श्री पाठक की 88 वीं जयन्ती समारोह वर्ष 2012 के "कीर्ति किंजल्क" पत्रिका अंक-3 वर्ष 2012 में प्रस्तुत है बहुरिया देवी स्थान पतिलार, कैलाशवा बाब कुटी बैराठी, बाबा हरिनाथ धाम टड़वलिया एवं ब्रम्ह बाबा स्थान बगहा ।

बहुरहिया देवी स्थान -

सैकड़ों वर्ष पूर्व से आस्था का प्रतीक माँ बहुरहिया स्थान पतिलार बाजार से सटे दक्षिण किनारे स्थित है। मंदिर के इतिहास पर गौर करें तो आजादी पूर्व वर्ष 1945 ई० में शेषनाथ ब्रम्हचारी ने माँ के स्थान पर आते ही एक बहुत बड़ा यज्ञ करवाया पुनः 31 वर्ष बाद 1976 में सिद्ध महात्मा चटिअहवा बाबा ने यहाँ हरिहरात्मक महायज्ञ कराया। माँ के प्रेरणा श्रोत बने चटिअहवा बाबा ने पुनः 5 वर्ष बाद 1981 में चंडी महायज्ञ कराया दोनो महायज्ञों के पश्चात् पतिलार गाँव के मध्य स्थित बहुरहिया स्थान पूरे क्षेत्र में ख्याति प्राप्त सिद्ध स्थान बन गया है। नवरात्र रामनवमी व नागपंचमी के अवसर पर यहाँ विराट् मेला लगता है।

बैराटी-

बगहा अनुमण्डल मुख्यालय से 28 किलोमीटर उत्तर राजा विराट का अधीनस्थ राज्य का क्षेत्र जहाँ कृष्णावतार के समय पाण्डवों को अज्ञातवास मिलने के बाद राजा विराट ने अपने राज में रहने और छिपने की जगह दी। उस राज के समीप ही दक्षिण दिशा में माई स्थान बैराटी देवी है, जहाँ एक शम्मी का पेड़ है, जिसपर पाण्डवो ने अपना अस्त्र-शस्त्र एंव वस्त्र छुपाया था वह पेड़ अभी भी वर्त्तमान है। वर्त्तमान में खुदाई के दौरान जमीन के अन्दर एक महान मिला है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि यह राज्य राजा विराट का ही था।

बाबा हरिनाथ धाम टड़वलिया-

बगहा पुलिस जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर उत्तर बगहा-सेमरा सड़क के किनारे अवस्थित टड़वलिया एक गाँव है, जहाँ हरिनाथ बाबा के नाम से मशहुर एक मंदिर है, जो बरगद पेड़ में स्थित है। इस मंदिर के अन्दर मात्र एक आदमी आ जा सकता है। यह मंदिर देखने में अदभूत और आश्चर्यजनक है। इस मंदिर की कहानी हरिनाथ बाबा से प्रारंभ होती है, जो इस मंदिर के संस्थापक व जन्मदाता भी है। इन्होने इस मंदिर को जीवंत बनाने लिए स्वयं जिंदा समाधि ले ली, जिस समाधि पर शिवलिंग कायम है। लोगो के कथनानुसार सैकड़ो वर्ष पहले शिवलिंग बहुत ही छोटे रूप में स्थापित किया गया था जो वर्त्तमान समय में बढ़कर क्विंटल में आ पहुँचा है।

कैलशवा बाबा कुटी-

बगहा पुलिस जिला मुख्यालय से दो किलोमीटर पश्चिम स्थित है कैलशवा बाबा की कुटी। 1955 ई० में छितौनी घाट पार कर कैलशवा बाबा ने कुछ दिनों तक सिमरा सवदाहा गंडक दियरा को अपना शरणस्थली बनाया। इस दियरा का नाम उनके ही नाम पर कैलशवा दियरा पड़ा। बगहा रेलवे स्टेशन से पश्चिम 1923-24 में टूटे हुए रेल पुल के पास के जंगल झाड़ी में अपना शरणस्थली कायम की जो कालान्तर में कैलशवा बाबा कुटी के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। वहीं [illegible] देवी का मंदिर है। 1978 में रेलवे की बेकार पड़ी भूमि में गंडक नदी के विस्थापित हजारों परिवारों की शरणस्थली बनी । यह क्षेत्र कैलाश नगर के नाम से आज भी मशहूर है।

कैलशवा बाबा द्वारा किया गया स्वंयभू भंडारा यज्ञ एक किवदन्ती बन चुका है कि इतनी सामग्री कहां से आयी, किसने भेजा ये बात अज्ञात रही। करीब पांच-पांच हजार व्यक्तियों की एक पंगत अनवरत भोजन करती थी। यह भी चार्चा है कि घी घट जाने पर बाबा के आदेश पर गंडक नदी के जल में पूरी छानी गयी।

श्री ब्रम्ह बाबा जी का स्थान-

बात 802 वर्ष पहले की है। ईसा सन् तेरहवी शताब्दी के आस-पास मुसलमान शासकों के आतंक से त्रसित हो जिन हिन्दुओं ने नेपाल को पलायन किया और वहां शरण ली। उनमें श्री दामोदर नाथ पाठक और ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक भी थे। पूर्व में ये तत्कालीन कन्नौज राज्य वर्त्तमान में बस्ती जिला के सौनहौला ग्राम के निवासी थे। वहाँ कन्नौज पर मुहम्मद गोरी का आक्रमण होने से 1194 ई० में पूरी तरह से राज्य बरबाद हो चुके थे और जयचन्द भी मारा जा चुका था। वहां की सारी सम्पति मुहम्मदगोरी लूट कर अफगानिस्तान चला गया और अपना जीता हुआ राज्य अपने एक खरीदे गये गुलाम

कुतुबदीन ऐबक को भारत के शासन की डोर सौंप गया। चारों ओर भुखमरी, गरीबी छा गई हिन्दुओं पर अत्याचार होने लगे हिन्दू जनता को बलात् धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया जाने लगा।

इन्ही परिस्थितियों से व्यथित हो दोनो भाई श्री दामोदर नाथ पाठक और ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक नेपाल राज्य के तत्कालिन शासक श्री महाराजधिराज अरि देव मल्ल के राज्य दरबार में उपस्थित हुए। नेपाल ही विश्व में एक ऐसा देश है जो कभी गुलाम नहीं रहा है। महान इतिहासकार सिलवन लेवी और डा० ऐमी के कथनानुसार महाराज धिराज श्री युक्त अरिदेव मल्ल ने दोनों ब्रमहण भाईयों की विद्वता से प्रभावित होकर अपना राजगुरू ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक को बना दिया। साथ ही नारायणी नदी के पार इनलोगों के जीवन-यापन के लिए एक बड़ा भू-खण्ड दान स्वरूप प्रदान किया। उस समय सीवान तक नेपाल राज था। माघशुदी २ रोज रविवार

1266 विक्रम सम्बत् 1209 ई० को शुभ आगमन हुआ और उस भू-खण्ड का नाम 27दिसम्बर1209 पाठकवली यानि पाठक लोगों की पंक्ति पड़ा जो आज अपभ्रश हो पठखौली हो गया है। और चूंकि मल्ल राजा के द्वारा यह भूखण्ड दिया गया था इसलिए पहले मल्ल कावली उसके बाद पाठकावली इस गांव का नाम करण हुआ।

अब श्री दामोदर नाथ पाठक पठखौली और श्री भुवाल राम पाठक नवरंगिया रहने लगे चूकि श्री भुआल राम पाठक बाल ब्रम्हचारी एवं साधु प्रकृति के थे इसलिए परमसत्ता जगदम्बा राजगढ़ी माई के स्थान पर आश्रम बनाकर नवरंगिया में भजन करने लगे। आज भी वहाँ आश्रम का खण्डहर विद्यमान है।

वर्षो पश्चात् एक दुखद घड़ी आई श्री भुआल राम पाठक को एक कायस्थ दीवान द्वारा खबर मिली कि पूर्व नेपाल नरेश महाराज अरि देव मल्ल के पुत्र महाराज श्री अभय देव मल्ल ने नारायणी नदी के उसपार बुटवल में अपना सैनूय खेमा गिराया है और अपने देनों पुत्रों जयदेव मल्ल अैर आनन्द देव मल्ल जो उनके सेनापति भी थे को आदेश दियाकि पाठकवली जाकर श्रीदामोदर नाथ पाठक पर चढ़ाई करें। ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक को जब यह खबर मिली तो नवरंगिया से दौड़े-दौड़े अपने बड़े भाई श्री दामोदर नाथ पाठक के पास पाठकवली आये और यह समाचार कह सुनाया। फिर दोनों भाईयों ने सोचा कि इनके पितामह श्री द्वारा दी हुई जागीर को बलात् छिन जाने से हमारी मर्यादा को क्षति पहूँचेगी क्योंकि हमराजगुरू जो ठहरे। इससे अच्छा होगा कि राजपुत्रों के आने पूर्व ही हम सब सपरिवार आत्मदाह कर लें ऐसा कर लेने से उन्हें उनकी दी हुई जागीर भी वापस मिल जायेगी और हमारी मार्यादा भी बची रह जायेगी।

फिर श्री दामोदर नाथ पाठक एवं ब्रम्हचारी भुआल राम पाठक भी दामोदरनाथ पाठक की पत्नी सहोदरा माई, उनकी दो विधवा पुत्री पानमती कुंवर, फुलमति कुंवर और एक मात्र पुत्र जो शादी शुदा थे श्री बेनीरामपाठक पूरे घर में आग लगाकर जलने लगे। श्री बेनी राम पाठक की गर्भवती पत्नी उस समय मायके गई हुई थी जिनको कुछ दिन

बाद एक पुत्र रत्न श्री डिहा राम पाठक का जन्म हुआ। उन्हीं से इस पाठखौली को पाठक वंश का विस्तार हुआ है। उसी समय उस रास्ते से धरू डोम सूप बेचने जा रहे थे, देखा कि हमारे गांव के मालिक आग में जल रहे हैं तो मैं इस गांव में रहकर क्या करूंगा। उसने भी उस धधकती आग में अपने को झोंक दिया। तब तक एक तेली तेल बेचने उस ओर ही जा रहा था, देखा कि ये सारे प्राणी आग में जल रहे हैं मगर इन्हें जलने में कष्ट हो रहा है तो उसने अपना सारा तेल आग में गिरा दिया ताकि उन्हें जलने में कष्ट न हो। ये सारा घटनाक्रम चल ही रहा था कि नेपाल नरेश महाराजधिराज अभय देव मल्ल और उनके दोनो पुत्र जयदेव मल्ल एवं आनन्द देव मल्ल आ पहूंचे, देखते है कि आग लगी हुई है और श्री दामोदरनाथ पाठक, ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक सहोदर भाई पानमति कुअर, फूलमति कुअर, बेनी राम पाठक और धारू डोम जल रहे हैं इन लोगों का पुरा शरीर आग में जल गया है मगर अभी प्राण निकलना शेष है। इस हृदय विदारक दृश्य को देख वे लोग हतप्रभ हो उठे कि बात क्या है? बोले कि हमलोग तो आप लोगों के दर्शन के लिए आये थे कि आप सब मेरे पिता श्री महाराज अरिदेव मल्ल के गुरू जो ठहरे पर यह क्या माजरा है। श्री दामोदरनाथ पाठक और ब्रम्हचारी श्री भुआल राम पाठक ने सारी बातें उनसे स्पष्ट कर दीं।

उनलोगों को पश्चाताप के सिवा कोई चारा न रहा। बाबा ने मरते समय कुपित होकर जाति को शाप दिया– तुम्हारा कभी हमारे गांव मलकौली–पठखौली में भला नहीं होगा, तुम लोग हमेसा यहां गरीब ही रहोगे। तुम्हारा यहां खानदान नहीं चलेगा। साथ ही तेली और डोम जाति के लोगो लोगों को आशीर्वाद दिया कि तुम्हें यहां कभी भी अन्न, वस्त्र, आवास की कमी नहीं रहेगी और तुम लोग हमेशा सुखी रहोगे।

उस दिन ज्येष्ट सुदी सात रोज शुक्रवार विक्रम संवत् १३६६ १३१२ ई० का दिन था। महाराज अभय देव ने राजगुरू के साथ विश्वसाघात किये जाने के दंड स्वरूप उस कायस्थ दिवानको पकड़वा कर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

पुनश्च: किसी किसी का कहना है कि श्री भुआल बाबा ने राजगढ़ी माई नवरंगीया में ही आत्मदाह किया है। क्योंकि वहां भी ऐसा ही ब्रम्हभुआल बाबा का चैरा बांधा गया है। जिसकी वहां के ग्रामिणों द्वारा पूजा आज भी की जाती है। बेतिया राज द्वारा उस स्थान को 10-12 बिगहा जमीन भी दी गई है। आश्रम के खण्डहर के अवशेष आज भी विद्यमान है। जिसे आप देख सकते हैं।

संदर्भ – नेपाल देश और निवासी ले० अनन्त अरुण, दिल्ली की खोज ले० ब्रज कृष्ण चांदी वाला, भारत का इतिहास ले० दिनानाथ वर्मा, बलदेव प्रसाद सिंह– विश्व इतिहास– सिलवन लेवी डा० ऐसी बिहार एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन।

संसाधन पुरुष–नंदेश्वर पाठक